ग्रन्थमाला 'आचारधर्म' : अलंकार – खण्ड ३

स्त्रियोंके अलंकारोंका अध्यात्मशास्त्रीय विवेचन

भूमिका

'सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु । उदारु अंग विभूषणम् ॥....' देवता भी अलंकारोंसे विभूषित होते हैं । स्त्रीके लिए अलंकार केवल शोभाकी वस्तु नहीं; अपितु उसकी सुन्दरता एवं शालीनताकी रक्षा हेतु सहस्रों वर्ष पूर्व मिली अनमोल सांस्कृतिक देन हैं । इस लघुग्रन्थमें शास्त्रसहित बताया गया है कि अलंकार स्त्रीको ईश्वरीय चैतन्य प्रदान करनेवाला तथा उसमें विद्यमान देवत्व जागृत करनेवाला एक महत्त्वपूर्ण घटक है ।

वर्तमान कलियुगमें लगभग प्रत्येक व्यक्ति न्यून-अधिक मात्रामें अनिष्ट शक्तियोंसे पीडित

है । यहां बताया गया है कि सामान्यतः पूर्वज, अनिष्ट शक्तियोंकी पीडा इत्यादि कष्टसे रक्षा करनेमें अलंकार कितने महत्त्वपूर्ण हैं । अलंकारोंका महत्त्व इससे प्रमाणित होता है कि एक साधिका में प्रकट वरिष्ठ अनिष्ट शक्तिको (मान्त्रिकको) साधिकाद्वारा धारण किए गए अलंकारोंपर प्रथम आक्रमण करनेकी इच्छा होती है । केवल अलंकारों की अपेक्षा उन्हें समय-समयपर विभूति लगाकर धारण करना कितना श्रेयस्कर है, यह एक साधिका द्वारा इस सन्दर्भमें किए गए सूक्ष्म ज्ञानसम्बन्धी प्रयोगोंसे स्पष्ट होता है । इससे शुद्धिके महत्त्वका भी बोध होता है । स्त्रियोंके विविध अलंकार, उनका महत्त्व एवं उन्हें धारण कर किए गए सूक्ष्म ज्ञानसम्बन्धी प्रयोगोंका विवेचन अलंकारसम्बन्धी पृथक ग्रन्थोंमें किया गया है ।

श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि इस लघुग्रन्थ द्वारा अलंकारोंके एवं ऐसी चैतन्यमय देन प्रदान करनेवाले हिन्दू धर्मके महत्त्वका बोध हो ।
– संकलनकर्ता

अनुक्रमणिका

(कुछ वैशिष्ट्यपूर्ण सूत्र '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।)

१. स्त्रियोंके अलंकार धारण करनेका महत्त्व एवं लाभ १७

* सौभाग्य-अलंकार अर्थात स्त्रियोंको उनके पतिव्रत धर्मका भान करवानेवाले माध्यम १९

* स्त्रियोंद्वारा अलंकार धारण करना, अर्थात स्वयंमें देवत्व जागृत करना २०

२. अतिभावुक स्त्रियां कैसे अलंकार धारण करें ?२९

३. विधवाको अलंकार क्यों नहीं पहनने चाहिए ? ३२
४. अलंकार पहननेवाली एवं न पहननेवाली स्त्री ३४
५. सामान्य स्त्री एवं अनिष्ट शक्तिके कष्टसे पीडित स्त्रीपर अलंकारोंका परिणाम ३७
६. अलंकार धारण करनेके विषयमें किए गए सूक्ष्म स्तरीय प्रयोग ५०
७. अलंकारके सन्दर्भमें व्यवहारिक सूचनाएं ७८
८. अलंकारोंकी अनावश्यकता किसे है ? ७९

सुसंस्कारी एवं आदर्श पीढी का निर्माण करनेवाला

Balsanskar.com

बोधप्रद कथाएं, तेजोमय इतिहास,
अध्ययनकी पद्धति, आरती इत्यादि

हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी एवं कन्नड भाषाओंमें कार्यरत !